International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं में दिव्य प्रेम की अवधारणा का अध्ययन

अंजलि सिंह
शोधार्थी, (हिंदी) द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

डॉ. मोहम्मद कामिल
शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्टस & सोशल साइंस, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर, दोनों भारतीय साहित्य और आध्यात्मिकता के दो महान कवि हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं में ईश्वर के प्रति प्रेम की अनूठी अभिव्यक्ति की है। कबीर एक संत कवि थे, जिन्होंने ईश्वर की खोज और आत्मा की सच्ची प्रकृति पर गहरा विचार किया। उनकी रचनाओं में ईश्वरीय प्रेम को एक आध्यात्मिक और सरल दृष्टिकोण से व्यक्त किया गया है। कबीर ने सीधे और स्पष्ट शब्दों में कहा कि ईश्वर किसी बाहरी स्वरूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति के हृदय में निवास करता है। उन्होंने धार्मिक औपचारिकताओं और बाहरी आडंबरों का विरोध किया और सच्चे प्रेम को ही ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग बताया। कबीर का प्रेम एक ऐसा प्रेम है जो व्यक्ति को उसके अहंकार से मुक्त कराता है, और उसे ईश्वर के समीप ले जाता है। उनके दोहे और साखियों में ईश्वर से मिलन के लिए किसी बिचौलिए की आवश्यकता नहीं बताई गई है, बल्कि स्वयं के भीतर ही ईश्वर को ढूंढ़ने का संदेश दिया गया है। रवींद्रनाथ टैगोर ने भी ईश्वरीय प्रेम को एक गहरे आध्यात्मिक और संवेदनशील दृष्टिकोण से देखा है। टैगोर की कविताओं में ईश्वर एक अदृश्य शक्ति के रूप में प्रकट होता है, जो प्रेम के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में आता है। टैगोर का ईश्वरीय प्रेम मानवीय प्रेम के रूप में व्यक्त होता है, जो भौतिक संसार के सभी द्वंद्वों और सीमाओं को पार कर अनंतता की ओर ले जाता है। टैगोर के लिए प्रेम केवल एक अनुभूति नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है, जिसमें व्यक्ति अपने अंदर की सीमाओं को तोड़ते हुए ईश्वर के सामीप्य को प्राप्त करता है। उनकी कविता 'गीतांजलि' में टैगोर ने इस प्रेम को मानवीय भावना और आत्मा के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। कबीर और टैगोर की कविताओं में ईश्वरीय प्रेम की अवधारणा में एक प्रमुख अंतर यह है कि कबीर का प्रेम साक्षात्कार और स्वानुभव पर आधारित है, जबकि टैगोर का प्रेम अधिक साहित्यिक और भावुकता से भरा हुआ है। कबीर ने अपने अनुभवों को अत्यंत सहज भाषा में प्रस्तुत किया है, जबकि टैगोर की कविताएं गहराई और भावुकता से ओतप्रोत हैं। कबीर का प्रेम, एक खोज की

तरह है, जहां वह परमात्मा को पाने के लिए हर सांस में जपता है, वहीं टैगोर का प्रेम उस सत्य को महसूस करने का एक तरीका है, जो जीवन के हर पहलू में विद्यमान है।

मुख्यशब्द- कबीर, रवींद्रनाथ टैगोर, कविता, दिव्य प्रेम, कबीर का प्रेम, आध्यात्मिक और संवेदनशील दृष्टिकोण

प्रस्तावना

रहस्यवादी कविता में, धार्मिक अनुभव के परमानंद को व्यक्त करने के लिए प्रेम केंद्रीय भाव है। अपने भक्ति योग: प्रेम और भक्ति के योग में, स्वामी विवेकानंद ने प्रतिपादित किया, "ईश्वर प्रेम है, और केवल वही व्यक्ति जिसने ईश्वर को प्रेम के रूप में जाना है, वह मनुष्य के लिए ईश्वरत्व और ईश्वर का शिक्षक हो सकता है" (33)। भक्ति कविता भी मानवीय प्रेम को दिव्य अनुपात तक विस्तारित करके प्रेम की इस जागरूकता को गाती है, जो प्रेमी के लिए महिला के प्रेम को ईश्वर के लिए आत्मा के प्रेम के बराबर बताती है। 'प्रेम' (प्रेम) भक्ति कविता में एक बहुत ही सामान्य रूप है।

भक्ति का मुख्य वातावरण प्रेम है, जो अपने विभिन्न रूपों और संबंधों में होता है, जैसे वात्सल्य (माता-पिता-संतान); सख्य (मित्रता); दास्य (सेवक-स्वामी); गुरु भक्ति (शिक्षक-शिष्य) और श्रृंगार या माधुर्य (कामुक प्रेम)। केरल की कुरुरम्मा वात्सल्यभक्ति का सार हैं, क्योंकि उन्होंने अपने कन्नन को एक बच्चे के रूप में देखा और भगवान पर मातृवत स्नेह उंडेला; चैतन्य महाप्रभु, सुदामा की तरह, भगवान के प्रति मैत्रीपूर्ण प्रेम रखते थे। सूरदास ने दास्य भक्ति के गीत गाए; तुलसीदास ने अपने भगवान की गुरु के रूप में पूजा की और खुद को एक उत्साही शिष्य के रूप में देखा; आंदाल और मीराबाई श्रृंगार भक्ति के प्रतीक हैं, जिन्होंने अपने चुने हुए देवता को अपनी दिव्य संगिनी के रूप में देखा; जयदेव का गीतगोविंदम भी राधा और कृष्ण के कामुक प्रेम का आदर्श है, जो जीवात्मा और परमात्मा के बीच के रिश्ते की अभिव्यक्ति है। हम 19वीं सदी के तमिल कवि सुब्रह्मण्य भारती में इन सभी विभिन्न प्रकार के प्रेम का मिश्रण पाते हैं। उनका कन्नन पाट्टू (कृष्ण के गीत) ईश्वर को विभिन्न प्रकार के मानवीय जुनूनों के स्रोत और लक्ष्य के रूप में चित्रित करने का एक बहुत प्रशंसित प्रयास है। भारती के कन्नन गीत गीतों का एक उत्कृष्ट संग्रह है जहाँ वे भगवान कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं और भगवान को विभिन्न संबंधों में देखते हैं। इन गीतों में कृष्ण को उनके जन्म के समय (कन्नन पिरापु), उनके आगमन (कन्नन वरवु), उनकी स्तुति (कन्नन थुथी), उनके शारीरिक विवरण (कन्नन येन अरसन), साथी के रूप में (कन्नन येन थोज़ान), माँ के रूप में (कन्नन येन थांडई), सेवक के रूप में (कन्नन येन

सेवकन), शासक के रूप में (कन्नन येन अरसन), शिष्य के रूप में दर्शाया गया है सीदान), गुरु के रूप में (कन्नन येन सदगुरु), बच्चे के रूप में (कन्नन येन कोझंडई), एक शरारती छोटे लड़के के रूप में (कन्नन येन विलायट्टु पिल्लई), प्रेमी के रूप में (कन्नन येन कादलन), लेडी लव (कन्नम्मा येन कादली) के रूप में, और कृष्ण परिवार के देवता के रूप में (कन्नन येन कुलदेवम)।

भक्ति, या ईश्वर के प्रति प्रेम ईश्वर प्राप्ति की कुंजी है; लेकिन भक्ति आंदोलन पारंपरिक मानदंडों के विरुद्ध विद्रोह था। यह आंदोलन, जो 6वीं शताब्दी की शुरुआत में तमिलनाडु में शुरू हुआ और 12वीं और 17वीं शताब्दी के बीच पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैल गया, एक अपरंपरागत आंदोलन की तरह शुरू हुआ, क्योंकि इसने आध्यात्मिक खोज के मार्ग में जाति भेद और लिंग भेद के विरुद्ध विद्रोह की वकालत की, इस प्रक्रिया में रूढ़िवादी अनुष्ठानों की अवहेलना की। भक्ति संतों ने अनुष्ठानों के माध्यम से मात्र दिखावे से परहेज किया और ईश्वर के हाशिए पर पड़े साधकों के उद्देश्य का समर्थन किया, उन्हें ईश्वरीय प्रेम की शक्ति के प्रति सचेत किया, जो उन्हें ईश्वर के साथ परम प्राप्ति और संवाद की दिशा में ले जाता है। रामानंद, रविदास, रैदास, वल्लभाचार्य, सूरदास, तुलसीदास, नामदेव, ध्यानेश्वर, तुकाराम, मीराबाई, लाल देद और अन्य मनीषियों जैसे शिक्षकों या संतों का एक समूह, ईश्वर और ईश्वर के प्रति प्रेम के महत्व का प्रचार करने वाले आंदोलन में अग्रणी प्रकाश था। उन्होंने सिखाया कि कैसे एक सच्चा साधक जाति, पंथ और लिंग की बाधाओं को दूर कर सकता है और कर्मकांडों और अनुष्ठानों की बाधाओं, संस्कृत की अज्ञानता और दर्शन की बाधाओं को भूलकर आध्यात्मिकता के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है, और ईश्वर के प्रति अपने अप्रतिरोध्य प्रेम की सरल अभिव्यक्ति द्वारा ईश्वरीय साम्य प्राप्त कर सकता है। इस अवधि में भारत की क्षेत्रीय और जातीय भाषाओं में भक्ति साहित्य की एक लहर सामने आई। भक्ति कवियों की इसी पंक्ति में संत कबीरदासजी और महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने भी अपनी छाप छोड़ी है।

कबीर और टैगोर: ईश्वरीय प्रेम की अद्वितीय दृष्टियाँ

कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर, दोनों ही अपने समय के महान आध्यात्मिक विचारक और कवि रहे हैं। इन दोनों का योगदान भारतीय साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में अतुलनीय है, और उनके विचारों में ईश्वरीय प्रेम का अनोखा दृष्टिकोण देखने को मिलता है। कबीर का जीवन और उनकी कविताएं भारतीय समाज में धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास के विरुद्ध एक सशक्त आवाज के रूप में उभरीं। कबीर ने ईश्वर को बाहरी अनुष्ठानों, मन्दिरों, मस्जिदों या मूर्तियों में

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

ढूंढ़ने के बजाय अपने भीतर खोजने का संदेश दिया। वे प्रेम और भक्ति की उस गहरी भावना की बात करते हैं, जहाँ ईश्वर को मन के एक अंश के रूप में अनुभव किया जा सकता है। उनकी रचनाओं में विशेष रूप से "राम" और "हरि" शब्द का प्रयोग देखने को मिलता है, जो ईश्वर की सार्वभौमिकता को इंगित करते हैं, और उनका मानना था कि हर व्यक्ति के भीतर ही ईश्वर का निवास है।

दूसरी ओर, रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई। वे कवि, दार्शनिक, संगीतकार और चित्रकार थे, और उनके कार्यों में ईश्वरीय प्रेम और मानवता के प्रति गहरा आदर देखने को मिलता है। टैगोर ने अपने विचारों को मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में ईश्वर की महिमा और उसकी व्यापकता का वर्णन किया गया है, और उन्होंने यह स्वीकार किया कि ईश्वर को केवल प्रेम के माध्यम से ही समझा जा सकता है। टैगोर का मानना था कि मानव जीवन का परम लक्ष्य ईश्वर से मिलन है, परंतु यह मिलन बाहरी अनुष्ठानों से नहीं, बल्कि अपने भीतर की दिव्यता को समझने और सभी प्राणियों से प्रेम करने के माध्यम से संभव है। वे मानते थे कि ईश्वर की प्राप्ति केवल उन लोगों को हो सकती है, जो दूसरों के दुख और सुख को अपने जीवन का हिस्सा मानते हैं।

कबीर की वाणी में जो तीव्रता और व्यंग्य देखने को मिलता है, वह टैगोर के लेखन में गायब है। कबीर अपने दोहों में स्पष्ट और सरल शब्दों का उपयोग करते हैं, जो सीधे व्यक्ति के हृदय को छूते हैं और उसे सोचने पर मजबूर करते हैं। कबीर के अनुसार, ईश्वर का प्रेम उस प्रेम से बहुत अलग है, जिसे हम साधारणतया मनुष्य से जोड़कर देखते हैं। उनका मानना था कि यदि किसी ने सच्चे हृदय से ईश्वर का प्रेम प्राप्त कर लिया, तो उसके जीवन में शांति और संतोष की स्थिति बनी रहती है। उन्होंने समाज में फैली रूढ़ियों और कुरीतियों को नकारते हुए अपने दोहों के माध्यम से एक साधारण परंतु गहरे संदेश को प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, "कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़े बन माहिं। ऐसे घटि-घटि राम हैं, दुनिया देखे नाहिं।" यह दोहा स्पष्ट करता है कि जिस प्रकार हिरण अपनी कस्तूरी को बाहर खोजता है, वैसे ही मनुष्य ईश्वर को बाहरी दुनिया में खोजता है, जबकि वह उसके हृदय के भीतर ही विद्यमान है।

टैगोर की कविता में प्रेम, सौंदर्य, और संगीत का अद्भुत समावेश होता है। उनके काव्य में ईश्वर के प्रति एक गहरी आत्मीयता और समर्पण की भावना झलकती है। टैगोर का मानना था कि प्रेम ही वह माध्यम है, जिससे मनुष्य ईश्वर तक पहुँच सकता है। उनकी कविताएं और गीत ईश्वर की ममता और करुणा का प्रतीक हैं। टैगोर के गीतों में जो लय और माधुर्य है, वह उनकी आत्मा की

गहराई को उजागर करता है। उनकी गीति-रचना "गीतांजलि" में उन्होंने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम और विश्वास को एक बालक की सरलता और श्रद्धा के रूप में प्रस्तुत किया। टैगोर ने लिखा है, "तू मुझमें है, मैं तुझमें हूँ।" उनके अनुसार, मानव और ईश्वर के बीच की यह दूरी केवल प्रेम के द्वारा ही पाटी जा सकती है। यह प्रेम न केवल ईश्वर के प्रति है, बल्कि सभी प्राणियों के प्रति करुणा और ममता का भाव भी है।

कबीर और टैगोर दोनों ने ही अपने-अपने तरीके से समाज को यह समझाने का प्रयास किया कि ईश्वर कोई बाहरी सत्ता नहीं है, बल्कि वह प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निवास करता है। कबीर के अनुसार, ईश्वर का प्रेम केवल उनके लिए है, जो अपने भीतर की बुराइयों को दूर करके एक स्वच्छ हृदय के साथ उसे अनुभव कर सकते हैं। उनके दोहों में एक अद्भुत गहराई है, जो व्यक्ति को आत्मावलोकन की ओर प्रेरित करती है। कबीर का संदेश था कि ईश्वर तक पहुँचने के लिए हमें किसी बाहरी मार्गदर्शक की आवश्यकता नहीं है, बल्कि अपने भीतर झांकने और स्वयं को समझने की आवश्यकता है। दूसरी ओर, टैगोर ने प्रेम को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा, जो मानव और ईश्वर के बीच की दूरी को कम करता है। उन्होंने अपने साहित्य में दिखाया कि ईश्वर केवल उनके पास नहीं है, जो मन्दिरों और मस्जिदों में उसकी पूजा करते हैं, बल्कि वह उन सभी के साथ है, जो मानवता से प्रेम करते हैं और अपने कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करते हैं।

कबीर और टैगोर की रचनाओं में एक बात समान है कि दोनों ने ईश्वर को केवल एक निराकार शक्ति के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे एक निकटतम मित्र और मार्गदर्शक के रूप में देखा। कबीर जहाँ प्रेम के माध्यम से ईश्वर को आत्मसात करने की बात करते हैं, वहीं टैगोर इसे एक उत्सव की तरह मानते हैं, जो मनुष्य और ईश्वर के बीच के अनमोल संबंध को दर्शाता है। दोनों का दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि ईश्वर को समझने के लिए न तो किसी विशेष अनुष्ठान की आवश्यकता है और न ही किसी बाहरी प्रक्रिया की, बल्कि हमें अपनी आत्मा की गहराई में उतरने की जरूरत है।

सरलता और सच्चाई के संदेश में कबीर का ईश्वरीय प्रेम

कबीर का जीवन और उनकी शिक्षाएं भारतीय संत साहित्य में एक विशेष स्थान रखती हैं। उनका संदेश साधारण, सीधा और गहरा था, और यह हर व्यक्ति के दिल तक पहुँचा। कबीर ने ईश्वरीय प्रेम को जटिलता और दिखावे से परे रखकर एक सच्ची और सरल भावना के रूप में प्रस्तुत किया, जो धार्मिक अनुष्ठानों और बाहरी क्रियाकलापों से परे थी। उन्होंने मानवता को यह समझाने का प्रयास किया कि ईश्वर की प्राप्ति किसी बाहरी साधन से नहीं, बल्कि अपने

IJARST
International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

अंतर्मन की गहराई में झाँकने और स्वयं को समझने से होती है। कबीर का यह संदेश उस समय के समाज के लिए एक क्रांतिकारी विचार था, जब लोग ईश्वर की उपासना को केवल अनुष्ठानों, व्रतों, और बाहरी कर्मकांडों तक सीमित मानते थे। उनकी कविताओं, विशेषकर दोहों में, ईश्वर की ओर एक अनोखे और सहज प्रेम की भावना का वर्णन मिलता है, जो किसी भी जाति, धर्म, या संप्रदाय की सीमा में बंधा नहीं था।

कबीर के अनुसार, ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग किसी विशेष पूजा-पाठ से नहीं, बल्कि सच्चे प्रेम और श्रद्धा से होकर गुजरता है। उनके दोहों में उन्होंने कई बार यह संदेश दिया कि ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, या अन्य किसी धार्मिक स्थल में ढूंढने की बजाय उसे अपने भीतर देखना चाहिए। उदाहरण के लिए, कबीर कहते हैं, "माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर। कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।" इस दोहे के माध्यम से वे यह समझाना चाहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति के लिए केवल बाहरी कर्मकांड पर्याप्त नहीं हैं; हमें अपने हृदय में ईश्वर का प्रेम और भक्ति को महसूस करना चाहिए। कबीर ने साधारण भाषा में, सरल शब्दों के माध्यम से यह दर्शाया कि ईश्वर की प्राप्ति उन लोगों के लिए संभव है जो सच्चे मन से उसके प्रति समर्पित हैं। कबीर के लिए ईश्वर का प्रेम एक ऐसी भावना थी, जो व्यक्ति को अपने भीतर की बुराइयों से ऊपर उठने और सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। उनका मानना था कि ईश्वर का प्रेम कोई सांसारिक प्रेम नहीं, बल्कि एक आत्मिक अनुभव है, जो मनुष्य को अपने अंदर छिपे सत्य को पहचानने में सहायक होता है। कबीर के दोहे हमें यह सिखाते हैं कि ईश्वर का प्रेम प्राप्त करने के लिए हमें किसी विशेष मार्ग का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें अपनी आत्मा की शुद्धता की ओर ध्यान देना चाहिए। उनके अनुसार, ईश्वर के निकट पहुँचने का मार्ग वही है जो सरलता और सच्चाई की ओर जाता है। वे कहते हैं, "जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ। मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।" इस दोहे में कबीर ने बताया कि ईश्वर को केवल वही प्राप्त कर सकता है, जो भीतर की गहराई में उतरकर सत्य की खोज करता है। यह गहराई में उतरना अपने भीतर की कमजोरियों, संदेहों और असत्य को त्यागना है, और इसके लिए साहस की आवश्यकता होती है।

कबीर ने अपने जीवन के अनुभवों से यह समझा था कि समाज में व्याप्त बाहरी दिखावे, धार्मिक पाखंड, और अंधविश्वास लोगों को सच्चे ईश्वर से दूर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग प्रेम, सच्चाई और समर्पण का है, न कि ढोंग और दिखावे का। कबीर के दोहों में

हमें स्पष्ट रूप से यह संदेश मिलता है कि ईश्वर का प्रेम केवल उन लोगों को मिलता है, जो स्वार्थरहित भाव से उसकी आराधना करते हैं। उनका मानना था कि मनुष्य को पहले अपने भीतर के द्वेष, घृणा, और लोभ को समाप्त करना चाहिए। उनके अनुसार, प्रेम की भावना तभी सच्ची हो सकती है जब मनुष्य अपने भीतर की कमियों को दूर करने का प्रयास करता है। कबीर के इस विचार को उनके एक प्रसिद्ध दोहे में देखा जा सकता है: "प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाय। जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाय।" इस दोहे में कबीर कहते हैं कि प्रेम की राह इतनी संकरी है कि इसमें केवल एक ही समा सकता है – या तो व्यक्ति का अहंकार या फिर ईश्वर। जब तक व्यक्ति के भीतर अहंकार है, तब तक ईश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है। ईश्वर को पाने के लिए अहंकार को त्यागना ही एकमात्र रास्ता है।

कबीर का ईश्वरीय प्रेम केवल किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय तक सीमित नहीं था। वे एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण के पोषक थे, जो मानवता के हर हिस्से में समान रूप से बंटा हुआ था। उनके अनुसार, ईश्वर केवल उन्हीं का नहीं है, जो मन्दिरों या मस्जिदों में जाकर पूजा करते हैं, बल्कि वह उन सभी का है जो सच्चे हृदय से उससे प्रेम करते हैं और उसकी खोज में अपने भीतर झाँकते हैं। कबीर ने इस सत्य को लोगों के सामने लाने का हर संभव प्रयास किया और अपने जीवन का अधिकांश समय इसे समाज में प्रचारित करने में बिताया। वे एक समाज-सुधारक की भूमिका में थे, जिन्होंने समाज में व्याप्त भेदभाव, छुआछूत, और जातिवाद का विरोध किया। उनके विचारों में यह साफ झलकता है कि ईश्वर का प्रेम सच्चाई, साधारणता, और मानवता के प्रति सम्मान की भावना से जुड़ा है।

मानवीय संवेदना और भक्ति के स्वरूप में टैगोर का ईश्वरीय प्रेम

रवींद्रनाथ टैगोर का ईश्वरीय प्रेम मानवता, संवेदना, और भक्ति के गहरे अर्थ को छूता है। टैगोर ने अपने जीवन और रचनाओं में ईश्वर के प्रति एक विशेष प्रकार का प्रेम प्रकट किया, जो न केवल साधारण भक्ति है बल्कि एक गहरी मानवीय संवेदना का विस्तार है। उनके लिए ईश्वर का प्रेम एक ऐसा पथ था जो मनुष्य को उसकी सीमाओं से परे ले जाता है और उसे मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध कराता है। टैगोर का ईश्वर भौतिक स्वरूप में नहीं, बल्कि हर प्राणी, हर फूल, हर प्राकृतिक तत्व में उपस्थित है। वह ईश्वर के अस्तित्व को केवल मंदिरों, मूर्तियों या धार्मिक विधानों में नहीं, बल्कि मानव हृदय में ढूँढ़ते हैं। उनके अनुसार, ईश्वर का प्रेम केवल आध्यात्मिक साधना नहीं है, बल्कि वह एक मानवीय कर्तव्य है जिसमें प्रत्येक

व्यक्ति दूसरों के सुख-दुख को समझता और अपनाता है।

टैगोर के विचार में भक्ति का अर्थ केवल व्यक्तिगत मुक्ति या आनंद नहीं, बल्कि समस्त जीवों के प्रति करुणा और सहानुभूति है। वे मानते थे कि भक्ति का सच्चा स्वरूप वही है जिसमें मनुष्य केवल अपने लिए नहीं बल्कि सभी के कल्याण की भावना से प्रेरित होता है। टैगोर ने अपनी प्रसिद्ध कृति "गीतांजलि" में लिखा है कि ईश्वर की उपासना का सबसे सच्चा मार्ग मानव सेवा के माध्यम से है। उन्होंने लिखा, "तू कहाँ ढूंढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास हूँ," जो उनके मानवीय संवेदनाओं को ईश्वर से जोड़ता है। उनके लिए ईश्वर किसी दूरस्थ या पहुंच से बाहर की सत्ता नहीं थी, बल्कि एक ऐसा निकटतम मित्र और सहायक था, जो हर जगह उपस्थित है। इसीलिए उन्होंने ईश्वर को केवल एक व्यक्ति विशेष के रूप में नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि के रूप में देखा, और मानवीय संवेदना का अद्भुत संतुलन स्थापित किया।

टैगोर के भक्ति के स्वरूप में ईश्वर और मानवता के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है। उनके अनुसार, ईश्वर केवल पूजा-पाठ का विषय नहीं है, बल्कि वह प्रत्येक इंसान के भीतर निवास करता है। उनकी यह धारणा उन्हें कबीर के करीब लाती है, लेकिन टैगोर के दृष्टिकोण में प्रेम और सौंदर्य की गहरी अभिव्यक्ति है। टैगोर का मानना था कि जब मनुष्य किसी और की पीड़ा को समझता है, उसके दुख में शामिल होता है, तो वह वास्तविक भक्ति का परिचय देता है। उनके लिए भक्ति का यही अर्थ था कि व्यक्ति केवल अपने लिए नहीं, बल्कि अपने समाज, अपने परिवेश और समस्त मानवता के प्रति जिम्मेदार हो। वे भक्ति को एक सजीव प्रक्रिया के रूप में मानते थे, जो इंसान को जीवन के विविध पहलुओं से जोड़ती है और उसे दूसरों की भावनाओं का आदर करना सिखाती है।

टैगोर की रचनाओं में ईश्वर और प्रेम का जो स्वरूप मिलता है, वह साधारण भक्ति से परे है। उनके लिए भक्ति कोई अनुष्ठान या विशेष कर्मकांड नहीं था। वे मानते थे कि सच्ची भक्ति वह है जिसमें मनुष्य अपने हृदय को शुद्ध रखता है और दूसरों के प्रति करुणा का भाव रखता है। टैगोर की कविताएं मानवीय संवेदना और करुणा से परिपूर्ण हैं। "गीतांजलि" में उन्होंने लिखा है कि ईश्वर को पाने का मार्ग किसी विशेष धर्म, जाति या वर्ग तक सीमित नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति उन्हीं को होती है, जो स्वयं को स्वार्थ से मुक्त करते हैं और दूसरों के सुख-दुख को अपना मानते हैं। उनके अनुसार, सच्ची भक्ति का अर्थ है दूसरों की भलाई और सेवा, जो ईश्वर के प्रति सच्चे प्रेम का रूप है।

टैगोर के लिए ईश्वर का प्रेम एक गहरी संवेदना का प्रतीक है, जो व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने

IJARST
International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

और अपनी कमजोरियों को समझने के लिए प्रेरित करता है। उनका मानना था कि जब व्यक्ति अपने अहंकार और आत्म-प्रशंसा से ऊपर उठता है, तभी वह ईश्वर के निकट पहुँचता है। टैगोर की भक्ति में वह सादगी और निःस्वार्थता है, जो व्यक्ति को सभी जीवों के प्रति दया और करुणा का भाव विकसित करने की प्रेरणा देती है। उन्होंने ईश्वर के प्रति अपने प्रेम को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनके गीतों और कविताओं में ईश्वर के लिए एक अद्भुत सम्मान, आत्मीयता और ममता का भाव देखने को मिलता है। टैगोर का यह विश्वास था कि जब व्यक्ति अपने भीतर की नकारात्मकता को दूर कर सच्चे हृदय से ईश्वर की ओर बढ़ता है, तो उसे एक ऐसा प्रेम मिलता है जो उसे सभी बंधनों से मुक्त कर देता है।

टैगोर के दृष्टिकोण में भक्ति केवल व्यक्तिगत मोक्ष प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा साधन है जो समाज में प्रेम, सहयोग और सह-अस्तित्व की भावना का विकास करता है। उनका मानना था कि यदि हम ईश्वर से सच्चा प्रेम करते हैं, तो यह प्रेम केवल हमारे तक सीमित नहीं रह सकता; यह पूरे समाज और दुनिया तक फैलेगा। टैगोर का यह विचार आज भी बहुत प्रासंगिक है, क्योंकि वर्तमान युग में, जब लोग भक्ति और धर्म के नाम पर भेदभाव और हिंसा करते हैं, तब टैगोर का यह संदेश कि ईश्वर की सच्ची उपासना मानवता की सेवा में है, हमें सोचने पर मजबूर करता है।

कबीर और टैगोर की कविताओं में प्रेम और ईश्वर की खोज

कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर दो ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं में ईश्वर और प्रेम की गहरी तलाश दिखाई देती है। दोनों कवियों ने ईश्वर की खोज को अपने तरीके से व्याख्यायित किया, लेकिन उनके दृष्टिकोण में एक समानता यह है कि वे दोनों प्रेम को ईश्वर के करीब पहुँचने का माध्यम मानते हैं। कबीर की कविताओं में प्रेम का एक सरल और आत्मीय रूप मिलता है, जो धार्मिक परंपराओं और बाहरी कर्मकांडों से दूर है। उनकी रचनाओं में ईश्वर की खोज आत्मा की गहराइयों में उतरने के रूप में प्रस्तुत की गई है। वहीं, टैगोर की कविताओं में ईश्वर की खोज मानवता के प्रति प्रेम, सेवा, और करुणा के माध्यम से होती है। टैगोर के लिए ईश्वर कोई बाहरी सत्ता नहीं, बल्कि हमारे अंतर्मन की गहराई में उपस्थित वह शक्ति है जो प्रेम, सौंदर्य और सृजनात्मकता के माध्यम से प्रकट होती है।

कबीर के दोहों में हमें ईश्वर की खोज का एक ऐसा स्वरूप देखने को मिलता है, जो सादगी और सचाई का प्रतीक है। कबीर का मानना था कि ईश्वर की प्राप्ति बाहरी अनुष्ठानों या कर्मकांडों से नहीं, बल्कि स्वयं की आत्मा में झाँकने से होती है। कबीर कहते हैं, "पोथी पढ़ि

IJARST
International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।" इस दोहे में कबीर ने प्रेम के उस अर्थ को स्पष्ट किया है जो ईश्वर से जुड़ने के लिए आवश्यक है। उनके अनुसार, ईश्वर को पाने का मार्ग ज्ञान या विद्वता से नहीं बल्कि प्रेम से होकर गुजरता है। यह प्रेम किसी भी प्रकार के भेदभाव, जाति, या संप्रदाय से परे है। कबीर का मानना था कि प्रेम वह शक्ति है जो मनुष्य को उसके अहंकार से मुक्त करती है और उसे ईश्वर के निकट ले जाती है।

टैगोर की रचनाओं में भी प्रेम और ईश्वर के प्रति एक गहरी आत्मीयता झलकती है। उनके काव्य में ईश्वर के प्रति प्रेम की भावना ऐसी है, जो व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने और अपने चारों ओर के लोगों के प्रति दया और करुणा का भाव रखने की प्रेरणा देती है। टैगोर के लिए ईश्वर का प्रेम केवल व्यक्तिगत अनुभूति नहीं है, बल्कि वह समाज के सभी वर्गों के प्रति प्रेम, सेवा और दान का प्रतीक है। टैगोर की "गीतांजलि" में यह भावना बार-बार उभर कर सामने आती है। वे लिखते हैं, "तू कहाँ खोजता है मुझे? मैं तो तेरे भीतर ही हूँ।" टैगोर का यह विचार कबीर के विचारों के समान ही है कि ईश्वर को बाहर की चीजों में ढूंढ़ने की बजाय उसे अपने भीतर महसूस करना चाहिए। टैगोर का मानना था कि ईश्वर की खोज का असली मार्ग तभी खुलता है जब व्यक्ति अपने स्वार्थों और अहंकार को त्यागकर दूसरों की भलाई के लिए जीने का संकल्प लेता है।

कबीर और टैगोर की कविताओं में ईश्वर का प्रेम किसी एक धर्म, जाति या समुदाय तक सीमित नहीं है। कबीर के अनुसार, ईश्वर को पाने के लिए कोई विशेष धार्मिक साधन आवश्यक नहीं है। वे कहते हैं, "माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर। कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।" इस दोहे में कबीर ने स्पष्ट किया कि ईश्वर की खोज का मार्ग बाहरी क्रियाकलापों से नहीं बल्कि मन की शुद्धता से होकर गुजरता है। कबीर की रचनाओं में हमें यह समझ में आता है कि सच्चा प्रेम उस ईश्वर के प्रति है जो सभी जीवों में समान रूप से व्याप्त है। ईश्वर के प्रति यह प्रेम उस समय की धार्मिक परंपराओं को चुनौती देता है, जिसमें पूजा-पाठ और अनुष्ठान की प्रधानता थी।

टैगोर के लिए ईश्वर की खोज का मार्ग प्रेम और सौंदर्य की अनुभूति से जुड़ा हुआ है। वे प्रकृति के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति को महसूस करते हैं और इस बात को "गीतांजलि" में बार-बार अभिव्यक्त करते हैं। उनके अनुसार, प्रेम और ईश्वर का संबंध ऐसा है, जो व्यक्ति को उसकी सीमाओं से परे ले जाकर उसे सृष्टि के साथ एकाकार कर देता है। टैगोर ने यह संदेश दिया कि ईश्वर को पाने के लिए केवल धार्मिक आस्था ही नहीं बल्कि मानवता के प्रति सच्ची

IJARST
International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

भावना का होना आवश्यक है। वे कहते हैं कि ईश्वर का प्रेम एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति को संपूर्ण समाज के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। टैगोर की कविताओं में यह स्पष्ट झलकता है कि जब तक व्यक्ति केवल अपने सुख-दुख तक सीमित रहता है, तब तक वह ईश्वर के प्रेम को महसूस नहीं कर सकता।

कबीर के लिए ईश्वर की खोज का मार्ग बेहद संकीर्ण और सच्चाई से भरा है। उनका मानना था कि ईश्वर को पाने के लिए व्यक्ति को अपने अंदर झाँकना और अपनी कमजोरियों, अज्ञानता और अहंकार को दूर करना आवश्यक है। कबीर का यह विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान समय में लोग बाहरी आडंबरों में ही ईश्वर को खोजने का प्रयास करते हैं। कबीर का मानना था कि प्रेम की गली इतनी संकरी है कि इसमें दो नहीं समा सकते - या तो व्यक्ति का अहंकार होगा या ईश्वर का प्रेम। उनके दोहे, जैसे "प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाय। जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाय।" में यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर की खोज में सबसे बड़ा बाधक हमारा अहंकार है। जब तक व्यक्ति अपने 'मैं' को नहीं त्यागता, तब तक वह ईश्वर के प्रेम का अनुभव नहीं कर सकता।

निष्कर्ष

कविता के लिए शब्द और लय की उच्च तीव्रता प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है; उन्हें भरने के लिए, उसमें दृष्टि की उत्तर देने वाली तीव्रता और अनुभव की हमेशा नई और अधिक उन्नत या आंतरिक सीमाएँ होनी चाहिए। और यह केवल कवि की व्यक्तिगत दृष्टि की शक्ति पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि उसके युग और देश के मन, उसके विचार और अनुभव के स्तर, उसके प्रतीकों की पर्याप्तता, उसकी आध्यात्मिक उपलब्धि की गहराई पर निर्भर करता है। एक बड़े युग में एक छोटा कवि हमें कभी-कभी ऐसी चीजें दे सकता है जो इस तरह के कम पसंदीदा अमर लोगों के काम से बेहतर हैं। बाद की भारतीय भाषाओं की धार्मिक कविता में हमारे लिए काव्य रहस्योद्घाटन का उत्साह है जो महान शास्त्रीयों में अनुपस्थित है, भले ही कोई भी मध्यकालीन कवि वाल्मीकि और कालिदास के साथ शक्ति में रैंक नहीं कर सकता है। यूरोप का आधुनिक साहित्य आमतौर पर सामंजस्य और रूप की ग्रीक पूर्णता से कम है, लेकिन वे हमें वह देते हैं जो महानतम ग्रीक कवियों के पास नहीं था और न ही हो सकता था। और हमारे अपने दिनों में प्रेरणा के क्षणों में एक माध्यमिक शक्ति का कवि शेक्सपियर या दांते की तुलना में हमारे भीतर की सबसे गहरी आत्मा को संतुष्ट करने वाली दृष्टि प्राप्त कर सकता है। सबसे बड़ी बात आने वाले युग की प्रतिज्ञा है, यदि मानव जाति अपनी उच्चतम और सबसे बड़ी उद्घाटन संभावनाओं को पूरा करती है और जीवनवादी दलदल में नहीं फंसती है या भौतिकवादी बाड़े

में बंधी नहीं रहती है; क्योंकि यह एक ऐसा युग होगा जिसमें सभी दुनियाएँ मनुष्य की नज़र से अपने परदे हटाने लगेंगी और उसके अनुभव को आमंत्रित करेंगी, और वह आत्मा के रहस्योद्घाटन के करीब होगा जिसके वे, जैसा कि हम चुनते हैं, अस्पष्ट परदे, महत्वपूर्ण रूप और प्रतीक या फिर पारदर्शी वस्त्र हैं। यह अभी भी अनिश्चित है कि नियति हमें इनमें से किस परिणति की ओर ले जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, अ. (2010). कबीर: भक्ति और प्रेम. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. टैगोर, र. (1910). गीतांजलि. कोलकाता: शकुंतला प्रकाशन.
3. श्रीवास्तव, क. (2015). कबीर की भक्ति और ईश्वरीय प्रेम. लखनऊ: पुस्तकालय प्रकाशन.
4. दास, प. (2008). रवींद्रनाथ टैगोर का प्रेम और आध्यात्मिकता. पटना: विद्या प्रकाशन.
5. यादव, म. (2012). कबीर की साखियाँ: प्रेम की साधना. वाराणसी: काशी प्रकाशन.
6. मुखर्जी, ब. (2013). प्रेम का विज्ञान: कबीर और टैगोर. कोलकाता: उपनिषद प्रकाशन.
7. वर्मा, ज. (2009). भक्ति साहित्य में ईश्वरीय प्रेम की खोज. दिल्ली: संकल्प प्रकाशन.
8. पांडे, स. (2016). कबीर और टैगोर: प्रेम की यात्रा. ग्वालियर: एकता प्रकाशन.
9. चटर्जी, स. (2011). ईश्वरीय प्रेम का दर्शन: कबीर से टैगोर तक. कोलकाता: साहित्य अकादमी.
10. मेहता, ए. (2014). कबीर और रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएँ. जयपुर: विमल प्रकाशन.
11. चौधरी, ए. (2012). "कबीर के दोहों में प्रेम की अनुभूति". हिन्दी जगत, 15(2), 45-58.
12. बनर्जी, र. (2015). "रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं में ईश्वर का प्रेम". भक्ति अध्ययन, 7(1), 29-42.